

धुन मुरली की सुन- राधा आई सज के
सखी रोसी भगी रे ॥१॥ सब तज के

धुन मुरली-----

हो गई है- सौतन जा तेरी मुरलिया
रोके पे रोकी न रुकी मेरी पायलिया
पाँव रोके बहुत ॥२॥ रही कहि बज के

धुन मुरली-----

जब तलक ओ श्याम तेरी- वंशी बजेगी
झूम-झूम राधा संग- सखियाँ नचेगी
आज तुम भी तो झ्याम ॥३॥ आये सज धज के

धुन मुरली-----

झ्याम संग फीत लगा- मैं तो रे हारी
नैनो में आन बसे- अब तो मुरारी
हमें तजियो न झ्याम ॥४॥ जी हैं केखों भज के

धुन मुरली-----

तेरी तो गिरधर गोपाल- लीला अजब है.
तीन लोक मोह लियो- कीन्हा गजब है
भाग जागे "श्री बाबा श्री" ॥५॥ गोकुल रज के

धुन मुरली-----